मनुष्य बना

व०मू०
६-००

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

दयाल फकीर चन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❀ मनुष्य बनो ❀

वर्ष २८	अषाड़ सं० २०३५ वि० जुलाई, १९७८	संख्या १०

सम्बोधन

सजनी प्रेम के सिन्धु नहा ॥टेक॥

उठत तरंग विचित्र अद्भुति, नहीं कुछ जात कहा ।
सुन्दर सुछवि स्वरूप सुहावन, शोभावान महा ॥ सजनी
कोई बड़भागी गोते मारे, प्रीति प्रतीत गहा ।
गोते मार शाँत चित होकर, भक्ति का मोती लहा ॥ सजनी
भक्ति का मोती अमोल अपारा, पावे सिन्धु थहा ।
क्या पावे जो भाग का मन्दा, दुविधा धार बहा ॥ सजनी
राधास्वामी दया से काम बनाया, जो सतसंग रहा ।
बिन सतसंग न बुधि मति शीतल, त्रिविध अग्नि दहा ॥ सजनी

शोक समाचार

पाठकों को अत्यन्त दुख के साथ सूचित किया जाता है कि श्रद्धेय सेठ दुर्गादासजो प्रधान व संस्थापक मानवता मन्दिर होशियारपुर का दि० ७-६-७८ को रात्री के लगभग ११ बजे उनके अपने निवास स्थान चन्डीगढ़ में देहान्त होगया है। आप ८० वर्ष के थे और पिछले ६१ साल से महाराज जी के सम्पर्क में चले आरहे थे। प्रारम्भ में आप भारत सरकार की सेवा में थे जिसके द्वारा बसरा बगदाद में महाराज जी के साथ ही रहते थे इसके पश्चात हिन्दोस्तान में आकर आपने ठेकेदारी शुरू करदी। आपने सन १९६१ में मानबता मन्दिर की स्थापना के लिये २२०००) रु० की राशि दानस्वरूप भेंट की जिसके फलस्वरूप तथा जिनकी आत्मिक शक्ति के द्वारा लगाया हुआ यह अस्पताल पंजाब के प्रमुख स्थानों में गिना जाता है। आप अपने पीछे ४ पुत्रियाँ तथा एक पुत्र छोड़ गये हैं। आपके स्वर्ग सिधारने पर मानवता मन्दिर में एक सप्ताह शोक मनाया गया तथा महाराज जी द्वारा उनकी आत्मा की शान्ती के लिये सत्संग कराया गया। मानवता मन्दिर का झंडा भी एक सप्ताह के लिये सेठ जी की स्मृति में झुका दिया गया।

मनुष्य बनो परिवार की परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा परिवार जनों को इस क्षति को बहन करने का धैर्य प्रदान करे।

सम्पादक एवं व्यवस्थापक

परम सन्त दयाल फ़कीरचन्द जी महाराज का १-७-७८ को अलीगढ़ में आगमन

सर्व श्री सेठ चक्खनलालजी के सुपुत्र मेजर एस. डी० गोविला के निमन्त्रण पर महाराज दि० १-७-७८ की सांयकाल ४½ बजे अलीगढ़ पधारे। सत्संगियों के अपार समूह ने आपका स्टेशन से ही स्वागत किया। मेजर गोविला जी ने अपने नवनिर्मित 'दीप्ती' भवन के उद्घाटन के सिलसिले में महाराज जी को आमंत्रित किया था।

दि० २-७-७८ को प्रातः ९ बजे महाराज का सत्संग हुआ जिसमें सैकड़ों की संख्या में सतसंगियों ने आकर महाराज जी के दर्शन पाकर अपने को कृतार्थ किया।

अपने प्रवचन में महाराजजी ने आम आदमियों के लिये जीवन में सुखी व मानसिक शान्ती के रहस्य को समझाया। उन्होंने कहा कि मनुष्य जब तक अपने मन के रूप को नहीं समझते हैं तब तक सुख दुख में नहीं बच सकते। जो यह संसार का खेल है यह हमारे ही अपने मन का बनाया हुआ है मन ही किसी को गुरु मानता है मन से चेला बनता है, मन से भक्त बनता है और मन ही भला बुरा करता है।

गुरुओं ने हम गृहस्थियों को भोले भाले जीवों को मूर्ख बना कर अपने डेरे बनाये हैं सच्ची बात किसी को बताते नहीं हैं। क्या कोई सन्त, महासन्त, महात्मा किसी का उद्धार कर सकता है क्या क्या कोई किसी के अन्दर में प्रकट होता है अगर कोई है तो आकर इस सचाई को बतायें। मगर हम अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर इस राज को पर्दे में रख कर लोगों से पैसा बटोर कर अपनी पुश्तों दर पुश्तों के लिये डेरे बनाते हैं। इनका क्या अन्जाम होगा मुझे

नहीं मालूम । दाता दयाल की धाम उजड़ गई । अगर मैं भी किसी को यह राज न बताता और पैसा लेकर अपने जीवन को पाप का भागी बनाता तो क्या अन्जाम होगा मैं तो इस खेल को देख कर डर गया ।

लोग नाम देते हैं मगर जीव की वृत्तियों को सुधारते नहीं। इसका उल्टा प्रभाव होता है । बजाय फायदे के सतसंगियों का इससे नुकसान होता है । जिसका ब्रह्मचर्य ठीक नहीं जिसका अमल ठीक नहीं यह नाम जपने से नुकसान उठायेगा । जैसा कार्य करोगे वैसा ही पौधा व फल पाओगे । अपनी रहनी को ठीक रखो, झूँठ, दगा-बाजी, ईर्ष्या, बेईमानी, काम, से जब तक अपने आप को नहीं बचा-ओगे तब तक तुम्हारा बेड़ा पार नहीं हो सकता चाहे तुम लाख सत्संग करो, मन्दिर में घंटियाँ बजाओ लाख तुम अपना सिर गुरु के चरणों में रगड़ते रहो ।

महिलाओं को सम्बोधित करते हुए महाराजजी ने बतलाया कि तुम गृहलक्ष्मी हो घर में शान्ती रखो अपने पति, माँ बाप, सास सुसर की सेवा के अलावा तुम्हारे लिये और कोई बड़ा सत्संग नहीं है, धर्म नहीं है । घर के जीवन में कुछ न कुछ नित्य प्रति दान करती रहो तुम्हारा अवश्य कल्याण होगा ।

मेजर गोविला का दृष्टान्त देते हुए फरमाया कि १९७१ की लड़ाई शुरू होने से पहले वह होशियारपुर आये थे । भृगुसंहिता में अपनी जन्म पत्री मिलवाई थी उसमें लिखा था कि १ साल बाद उन पर अति कठोर शारीरिक कष्ट आयेगा । कारण यह कि पिछले जन्म में उन्होंने रिश्वत लेकर एक निर्दोष को सजा तथा दोषी को छोड़ दिया था । नतीजा यह हुआ कि इस जन्म में लड़ाई खत्म होने के बाद गस्त में उनकी जीप जमीन में बिछी बारूद के विस्फोट से नष्ट होगई तथा उनकी एक टाँग उड़ गई । $1\frac{1}{2}$ वर्ष अस्पताल में

रहे और उसके बाद रिटायर होगये। यह है कर्म का फल। इन सब नतीजों को देख कर यह निश्चय है कि हर मनुष्य को अपने कर्म का फल भुगतना पड़ता है मगर यह भी सत्य है कि किसी सत-पुरुष की संगत से उनका परिणाम महसूस नहीं होता है। दुख-सुख व्याप्त नहीं होता है।

अपना जीवन सच्चाई से गुजारो, दूसरों की सेवा करो तथा मन को पवित्र रख कर संसार में जीओ तो तुम्हारा बेड़ा अवश्य पार होगा।

इन दो दिनों में महाराज के अलीगढ़ के ठहरने पर हजारों सतसंगियों ने सत्संग का लाभ उठाया तथा खाने व ठहरने का प्रबन्ध सभी श्री एस. डी. गोविला जी ने ही वहन किया।

भवदीय

प्रभूदयाल मीतल

प्रार्थना

प्रिय पाठक गण, 'मनुष्य बनो' का १० वां अंक आपके हाथों में है परन्तु आप में से बहुत से सज्जनों ने अभी तक इसका वार्षिक मूल्य जो कि सिर्फ ६) रु० है अभी तक नहीं भेजा आप उन सभी महानुभावों से निवेदन है कि जिन भाइयों ने अभी तक अपना वार्षिक मूल्य नहीं भेजा है शीघ्र ही भेजने की कृपा करें ताकि 'मनुष्य बनो' आपकी सेवा निरन्तर करता रहे।

—व्यवस्थापक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल पंडित फकीरचन्द जी महाराज
मानवता मंदिर होशियारपुर

दि० १-६-७८

एक दिन माटी में मिल जाना ।
तेल फुलेल केबड़ा चन्दन, भूषण वसना और काया मंजन,
वृथा हैं सब सोच समझ मन, यह तन भस्म समाना ।
चार जना मिल तोहि उठावें, अब घट मरघट ले पहूंचायें,
भस्मीभूत कर घर फिर आवें, हंस अकेला जाना ।
कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, धन सम्पति और छोड़ा छोड़ी,
बीत गई आयु रही थोड़ी, चेत मैं तोही चिताना ।
लट खोले घर तिरिया रोवे, मात पिता सुत सुध बुध खोवें,
प्राण विहीन खाट नर सोवे, या दिन सब ही आना ।
भव सागर में गोता खाया, भोग विषय नर जन्म गँवाया,
झूठी माया झूठी काया, इन संग क्यों भरमाना ।
ऊँची जाति नाम जग पाया, झूठ साँच कह सब ही बुझाया,
आप फँसा औरन फँसाया, वृथा जनम बिताना ।
छिन छिन आयु घटत दिन राती, किसके पूत हैं किसके नाती,
मरन समय कोई संग न साथी, तोहि अकेले जाना ।
माया फाँस गले में डारी, काहु बिध-उतरे नहीं पारी,
धन दौलत बन्धु सुत नारी, कोई साथ न जाना ।
ध्यानी भये मोह नहिं छूटा, ज्ञानी भये भरम नहीं टूटा,
निश दिन बँधे यमराज के खूँटा, धिक नर पशु समाना ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सेठ दुर्गादास दो दिन पहले चला गया। १९४७ में यह बसरे बगदाद में सिगनलर बनके गया था। मैं वहां टैलीग्राफ इन्सपैक्टर था। मेरा इससे प्रेम हुआ। इसने हुजूर दाता दयालजी महाराज से नाम लिया था। मगर मेरा उसका प्रेम था। उसके चले जाने से मैंने सात दिन का सोग मनाना आरम्भ किया। झण्डा भी नीचे कर दिया। क्योंकि इस व्यक्ति ने मानवता मन्दिर की नींव रखी थी इसलिये मेरे साथ इसका बड़ा प्रेम था। यह स्वाभाविक बात है कि जिस पर जो उपकार करता है उसका उससे प्रेम का होना आवश्यक है मेरे इसके पिता पुत्र के सम्बन्ध थे। इसके मर जाने पर मुझे जो अनुभव पहले था वह पक्का होगया। इस विचार से अगर मैं सेठ दुर्गादास को अपना गुरु कहूँ तो मैं गलती पर नहीं। क्यों? आज कल गुरुमत का जोर है। गुरु की महिमा गाई जाती है मगर जो असली और सच्चा गुरुमत है उसको पूरी तरह प्रकट नहीं किया गया। साधारणतया दस्तूर है, कहते हैं अन्त समय राम, कृष्ण, गुरु या कोई न कोई आके ले जाता है। मेरे अनुभव में यह गलत सिद्ध हुआ। क्यों? वह स्वर्गवास होगया। मुझे पता लगा है कि किसी ने उससे पूछा कि क्या बाबाजी (फकीरचन्दजी) को कुछ कहना सुनना है? तो पता लगा कि उसने कहा कि बाबाजी तो मेरे पास बैठे हैं और मैं तो था नहीं मुझे तो आशा ही नहीं थी कि मर जायेगा। क्यों आशा नहीं थी? हमारे ज्योतिषि व्यासजी ने कहा था कि पहले इसकी स्त्री मरेगी फिर वह मरेगा। मैं इस विचार से बिलकुल बेचिन्त हो वेपरवाह (वेचिन्त) था क्योंकि ज्योतिषि को मैं सच मानता हूं।

व्यास भी सच्चा है क्योंकि उसकी पहली स्त्री पहले ही मर चुकी है। वर्तमान बीबी उसका दूसरा विवाह है। ज्योतिष तो उसका भी गलत नहीं था। इस वास्ते मेरी समझ में यह आया है कि इन्सान को पूर्ण ज्ञान नहीं हैं। अगर मुझे

राम रहीम करीम न केशो ।
कुछ नहीं कुछ नहीं कुछ नहीं था सों ।

यह हमारा आदि है और यह हमारा अन्त है मगर इस माया के जाल में फँस कर कुछ न कुछ बनते और करते रहते हैं । मैं अपनी ओर देखता हूँ कि क्या मैं बरी हूं ? नहीं । मैं भी बरी नहीं हूं । यह मानव मन्दिर और सत्संग कराने का क्या झमेला नही है ? यही माया है । मगर जब तक जीवन है हम प्रकृति के कर्म के आधीन काम करने के लिये बिवस हैं । मैं रात दिन यही सोचता हूं और देखना चाहता हूं कि क्रियात्मक रूप से मेरा क्या परिणाम होगा । दुर्गादास कहाँ गया ? मुझे क्या पता क्योंकि मेरे विचार से इस समय धार्मिक और पंथिक संसार में सच्चाई नहीं है और दाता दयाल ने मुझे आज्ञा दी थीं कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना इसलिये मैं अपने अनुभव अनुसार जब मुझे यह पता ही नहीं कि दुर्गादास कब मरा और नहीं मुझे विश्वास था कि वह मर जायगा केवल ज्योतिष के विचार से ।

यह जितनी पंथों की रोचक और ग्यानिक शिक्षा है यह गलत है, हम गृहस्थी भोले माले है, जो पंथ उठता है हमें अपनी ओर रोचक और भया-नक बातें बता बता कर खींच लेता है । अब क्योंकि अपना राज है मेरे जिम्मे कर्तब्य है कि शिक्षा को बदल जाऊँ इसीलिये कहता हूँ कि दाता-दयाल ने सच कहा है कि वहाँ अकेले ही जाना है ।

एक दिन मांटी में मिल जाना ।
तेल फुलेल केवड़ा चन्दन, भूषण और काया मंजन ।
बृथा हैं सब सोच समझ मन, यह तन भस्म समाना ॥
चार जना मिल तोहि उठावें, शब घर मरघट ले पहुंचावें ।
भस्मीभूत कर घर फिर जावें, हंस अकेला जाना ।

मैं दाता दयाल के इस शब्द के साथ सहमत हूँ कि हंस को अकेले जाना है । क्यों ? कि जब दुर्गादास ने कहा कि मैं इसके पास बैठा हुआ हूं, मैं तो था नहीं वह जो कहता कि बाबा जीं मेरे पास बैठे हुये हैं वह उस समय

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

यह विचार न मिला हुआ होता तो चाहे कुछ भी होता मैं अवश्य उसकी बीमारी के समय पर उसको मिलने जाता क्योंकि यह मेरा कर्तव्य था। १९१७ से लेकर आज १९७८ तक अर्थात इकसठ साल का हमारा आपस में प्रेम था। उसने मेरी बहुत सेवा की और मन्दिर की भी। इन घटनाओं को सुन कर, देखकर मुझे बहुत वैराग्य हो गया है। अगर धर्म से, कोई मेरी आत्मा से पूछे तो मैं सब धर्म पंथ छोड़ गया। इन धर्मों, पंथों और सम्प्रदायों ने संसार में क्या कुछ विपत्तियां नहीं डालीं। दाता दयाल का आज यह शब्द पढ़ा गया। वह कहते हैं—

इक दिन माटी में मिल जाना।

तेल फुलेल केवड़ा चन्दन, भूषण बसन और काया मंजन,
वृथा हैं सब सोच समझ मन, यह तन भस्म समाना॥

हम सब ने चले जाना है। मगर हम धर्म या पथ वाले कुछ न कुछ उपाय करते हैं कि हमें कोई लेजायेगा जहां हमने जाना है। कोई कहता है गुरू लेजायेगा, कोई कहता है कृष्ण लेजायेगा, यह लेजायेगा, वह लेजायेगा मगर मुझे तो सिद्ध होगया कि कोई नहीं लेजाता। इन्सान का अपना ही कर्म, बिचार और विश्वास उसे लेजाता है। कहां जाता है? शोक (अफ़सोस) उस स्थान का पता है मगर वहाँ ठहरा नहीं जाता। वह जगह क्या है? जहां यहां से जो जाने वाला है उसकी अपनी 'मैं' ही समाप्त हो जाती है और यही बात सन्त कबीर और राधास्वामी दयाल ने अपनी वाणियों में कही हैं। कबीर साहिब कहते हैं—

जहा पुरुष तहां कुछ नाहीं, कहैं कबीर हम जाना।
हमरी सैन जो कोई समझे पावे पद निर्बाना॥

स्वामीजी जेठ महीने में लिखे गये, हम कहां जाते हैं और कहां से आये हैं?

नहीं खालिक मखलूक न खिलकत।
नहीं कारण काज़ न आगे दिक्कत।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

माया में फँसा हुआ था। यही एक भेद है जिसके न समझने से हमारा द्वेष राग घृणा इस संसार में मौजूद है।

दुनिया ! पता नही, अगर कहीं तेरी आत्मा है तो सारा जीवन तुम्हें यही कहता रहा हूं और अब भी कहता हूँ कि अकेले ही जाना है। न किसी गुरू और न किसी सम्बन्धी ने साथ जाना है। अगर मेरे या मेरे मन्दिर के साथ तुम्हें प्रेम है तो उसे छोड़ दो और अपने घर को चले जाओ।

कैसा अज्ञान फैला हुआ है, कोई कहता है देवी आई, कोई कहता है शिवजी आये। कौन आता है। केवल अपना ही भ्रम और अपना ही विश्वाश है। अगर कोई धर्म है तो असलियत को समझ कर अपने आपको जानना है। मैंने जान लिया कि मैं कौन हूं। मैं एक चेतन का बुलबुला हूँ। जो उसकी इच्छा है उसने कर लिया। कहां जाऊँगा ? न मैं पहले था और न आगे रहूँगा। मैंने यह मन्दिर लोगों के अज्ञान को दूर करने के लिए बनाया मगर संसार अज्ञान को दूर करना नहीं चाहता।

दया

हम आये आये आये हैं ।।टेक ।।

तुमको दुखी देख आंखों से, मन में दया समाई।
दया रूप धर प्रगटे जग में, दया यहां ले आई ।। आये हैं
सूरज दया का गगन प्रकाशा, किरनें दया की धारा।
दया सिंध उमगा और बाढ़ा, दया भाव विस्तारा। आये हैं
सुर नर मुनि की यह हैं रीती, लग स्वारथ करें प्रीती।
हम में नहीं है स्वारथ किंचित, लख लख करो प्रतीती ।। आये हैं
उदर निमित्त करें सब भेषा, योगी जतीं उदासी।
मांगें भीक ज्ञान की गम नहीं, तुम उनके विश्वासी ।। आये हैं
भूल भरम तज कर सत संगत, हिये की आंख खुलाओ।
राधास्वामीं रूप निरख कर, दया से काज बनाओ ।। आये हैं

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल पं० फकीरचन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर, होशियारपुर

२७-६-७८

हाय मां ! मैं रह न सकूं !

एक स्त्री थी वह हर समय मुँह से बुरी बातें निकालती थी। उसके बच्चे उससे बहुत तंग थे। घर में एक शादी थी। उसको एक कमरे में बन्द कर दिया ताकि यह कोई बुरी बात न कहे अन्त में जब लड़के को अभी सेहरा नहीं बांधा था तो उसने खिड़की से झाँक कर कहा 'इसके सिर पर सेहरा तो फूँक दो।' वह विवश थी अपनी आदत नहीं छोड़ सकती थी। ऐसे ही मैं भी विवश होकर यह लिख रहा हूँ।

जब मैं सोचता हूं कि स्वपन अवस्था के विचार इन्सान के शरीर पर प्रभाव डालते हैं स्वप्न में किसी को मुक्का मारते हो तो तुम्हारा हाथ हिलता हैं, डरते हो तो तुम्हारी जबान बड़बड़ाती है। तुम विचार से कोई स्त्री बना लेते हो, तुम्हारा वीर्य निकल जाता है। तो मुझे यह सिद्ध हुआ कि विचार मे बड़ी शक्ति है। जब स्वप्न के विचार जो हमारे बस में नहीं हैं वह शरीर पर प्रभाव डालते हैं, तो इस समय जो द्वेष घृणा, ईर्षा मत्सर का जो वातावर्ण है, कुर्सियों के लिये, लड़ाई, घरेलू और राजनैतिक लड़ाई या महात्माओं में अपने लिये बड़ाई और दूसरों के लिये बुराई धार्मिक द्वेष आदि, यह भारतवर्ष को खा जायेंगे अर्थात घातक सिद्ध होंगे। इसका परिणाम क्या हो यह मैं नहीं कह सकता मगर अच्छा नहीं होगा।

मैं जानता हूं तूती की आवाज को नक्कारखाने में कोई नहीं सुनता मगर हाय माँ ! मैं रह न सकूँ। अपनी आदत के वश में आकर लेख लिख रहा हूं। आशा करता हूं कि देश के नेता, जनता पार्टी, कांग्रेस या अन्य महात्मा हम शान्तिप्रिय और भोले भाले लोगों की जिन्दगियों के साथ न खेलें। छोटे आदमी का घृणा द्वेष का विचार छोटा दायरा बनाता है, बड़े

आदमियों के गलत विचार देश को हानि पहुँचाते हैं। जिस तरह कौरवों और पाण्डवों की (Gold war) जब यह बच्चे थे तो उनके दिलों में द्वेष था, तो बाद में महाभारत के युद्ध का रूप धारण कर गया। मुझे डर है कि इन वर्तमान लीडरों और पंथिक दुनियाँ वालों के घृणा और द्वेष के विचार बहुत बुरा परिणाम पैदा कर देंगे।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि कोई हल है इस संकट (Crises) का ? है तो सही मगर अमल में लाना कठिन है। जब से स्वराज्य मिला है मैं अपने विचार प्रकट करता हुआ आरहा हूं कि वर्तमान प्रजातन्त्र में Systems of Election) चुनाव प्रणाली है, यह एक मीठा जहर है। इस से देश का सारा वातवरण घृणा, द्वेष और पक्षपात से दूषित हुआ है। जब नक System of election बदलेगा नहीं, वर्तमान विपत्तियां, समाप्त नहीं होंगी। इस समय Auto-Democracy की आवश्यकता है। Auto Democracy क्या है, यह मैं पहले कई बार बता चुका हूं।

सोचता हूँ कि कोई तेरी बात को सुनेगा ? नहीं ! हाँ, दुख और कष्ट उठाने के बाद शायद सोचें। फिर मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तू क्यों चिन्ता करता है ? जो होना है होना है। मगर मैं क्या करूँ। एक गीदड़ परवाना मेरे पीछे लगा हुआ है। दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज ने मुझे एक ख्याल दिया था।

तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज, अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्यान जगत में आया, परमदयाल सनेही ॥

उनकी आज्ञा के पालन में जगत कल्यान के ख्याल से आज ३८ वर्ष से यह काम कर रहा हूं।

'इन्सान बनो' की आवाज १५ अगस्त १९४७ से उठाई। मालूम नहीं ! मेरे इस काम का परिणाम क्या हो मगर अपनी ओर से जो कर्तव्य दाता-दयाल महर्षि जी महाराज ने मुझ पर लगाया हैं उसको पूरा करने के ख्याल से यह लेख प्रस्तुत करता हूं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सतसङ्ग

हजूर परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर दिनांक ११-६-७८

मन अन्तकाल जब आता है ।

धन सम्पत्ति और मान बड़ाई, साथ नहीं कुछ जाता है ।
किसका कौन पुत्र हुआ उस दिन, कौन बन्धु हित भ्राता है ॥
कुटुम्ब कबीला काम न आवे, झूठा जग का नाता है ।
वायें तिरिया आंसू बहावे, दायें सुत पितु माता है ॥
चलते समय न संग हो कोई, हंस अकेला जाता है ।
बस्ती छोड़ मोड़ मुंह सबसे, ऊजड़ ग्राम बसाता है ॥
कोई गाड़े कोई माटी मिलावे, कोई आग जलाता है ।
वा दिन की कुछ सुध कर मन में, क्यों भूला भरमाता है ॥
जो नहि चेत करें गुरु संगत, रोता और पछताता है ।
काल करम की डगर कठिन है, यम उत्पात मचाता है ॥
पंथ न सूझे रात अंधेरी, मारग कौन दिखाता है ।
इस जग में रहना दो दिन का, जो आया सो जाता है ॥
राजा रंक भिखारी पंडित, काल सबन को खाता है ।
भज गुरु नाम लाग गुरु सेवा, गुरु संग काज बनाता है ।
राधास्वामी चरन बलिहारी, सेवक गुरु गुन गाता है ।

राधास्वामी ! सेठ दुर्गादास जो हमारे मानवता मन्दिर के प्रधान थे चन्डीगढ़ में स्वर्गवास हो गये । उसके सिलसिले में व्यावहारिक रीति से शोक मनाने के विचार से हमने अपना मानवता का झंडा भी झुका दिया और सतसंग भी शोक के ही करते हैं । मगर ये तो सांसारिक और रसमी बातें हैं। संसार का व्यवहार है । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि यह संसार क्या है । यह ठीक कि हमने चले जाना है, सबने जाना है मगर यह क्या है ? यह ऊपर शब्द दाता दयाल का है । वह कहते हैं—

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

भज गुरु नाम लाग गुरु सेवा, गुरु संग काज बनाता है।
राधास्वामी चरन बलिहारी, सेवक गुरु गुन गाता है।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तूने गुरु की सेवा की फकीरचन्द ! सच बता, तेरा क्या काज बना ? क्या मैं अपनी आत्मा से ऐसा प्रश्न करने का अधिकार नहीं रखता ? जो इच्छा है आप लोग मुझे समझें। मैं न तो गुरु हूं और न ही महात्मा हूँ। तुम्हारा अपना ही विश्वास काम करता है। मगर मैं अपने आपसे पूछता हूँ तू ने दातादयाल की यह वाणी सुनी। उन्होंने लिखा है जब मानव मर जायेगा तो ऐसा ऐसा होगा, कोई साथ नहीं जाता। यह ठीक है मगर आगे लिखते हैं—

भज गुरुनाम लाग गुरु सेवा, गुरु संग काज बनाता है।
राधास्वामी चरन बलिहारी, सेवक गुरु गुन गाता है॥

हर एक धर्म, पंथ वाला यही कहता है कि गंगा चले जाओ, वहां नहाकर पवित्र हो जाओगे, कोई कहता है फलाँ (अमुक) स्थान पर जाकर नहाओ पवित्र हो जाओगे, कोई कहता है विष्णु की सेवा करो, कोई कहता है शुक्ल पक्ष में गाय को मथो। गुरु मत कहता है कि गुरु के पास जाओ। मैं तो गुरुमत में आप आया नहीं, लेकिन मेरा भाग्य था और उसकी मौज थी। मैं नाककटों में सम्मिलित (सामिल) नहीं हुआ। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं। तुमने गुरु का नाम जपा, गुरु की सेवा की, क्या तेरा काज बन गया ? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं। मेरा क्या काज बना ? आप लोग मेरे पास संसारिक इच्छायें लेकर आते हो, कोई कहता है धन नहीं है, कोई पुत्र माँगता है किसी की लड़की ने पढ़ना है। यह संसार इसी प्रकार का है। हर एक आदमी (जीव) जो इस संसार में आया है अपना अपना कर्म भोगता है। मेरा काज, मेरी समझ अनुसार जो बना, वह मैं बता सकता हूं।

जबसे मुझे यह विश्वास हुआ कि मैं अमेरका, अफ्रीका आन्ध्र प्रदेश में किसी के अन्तर नहीं जाता। लोग मेरा ध्यान करते हैं, उनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होकर किसी को दवाई बता जाता है, किसी को पुत्र दे जाता है, कई लड़कों के परचे हल करवा देता है, किसी को नदी में डूबने से बचा जाता है

मेरे तो बाप को पता नहीं होता और न ही मैं किसी के अन्तर जाता हूँ। मैंने क्या पाया ? कि जो कुछ भी हम सोचते, अन्तर में देखते या दुखी सुखी होते हैं। यह हमारा अपना ही विचार, खेल और मन की कल्पना है। कोई बाहर से नहीं आता जो तुम्हें बचायेगा। गुरु से मुझे क्या मिला ? मुझे पता नही कि दातादयाल को गुरु से क्या मिला जो वह कहते हैं, गुरु, सेवक, गुरु के गुण गाता है। यह दातादयाल, या जो गुरुमत वाले जानते होंगे कि उनको क्या मिला ? क्या उनका काज बना ? दुर्गादास का क्या काज बना ? मुझे पता नहीं। मैंने जो कुछ जीवन में समझा, समझाता रहा। किताबें लिखीं। उसने मेरी बहुत सेवा की अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि वह मर गया तुम्हें पता है कि वह कहाँ गया ? तू जानता है कि वह कब मरा ? नहीं। गुरु से काज बनाना क्या है ?

जिस प्रकार वाणियों में लिखा है कि सब संसारी भ्रम में आये हुये हैं। नाम ले लो अन्त समय पर तुम्हें सत्गुरु, सतलोक ले जायेगा, कैसे मानूँ ? लोग मरते हैं, मेरा ध्यान करते हैं। मुझे तो पता नहीं होता। फिर वह काज बनाना क्या है ? काज बनाना यह नहीं कि गुरु से नाम ले लो तो काम समाप्त हो गया और तुम्हारा बेड़ा पार हो गया। यह बिलकुल झूठ और बकवास है। परशोत्तमदास ! मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तुझे गुरु से क्या मिला ? तू मेरा बसरेबगदाद का मित्र है। मैं बड़ी सच्चाई से काम कर रहा हूँ। मेरा क्या काज बना ? मुझे समझ आ गई कि जो कुछ मेरे मन के अन्तर फुरनायें फुरती हैं, वासनायें और विचार उठते हैं यह सब कल्पना है। इसमें कोई सच्चाई नहीं मैं क्यों कहता हूँ कि कल्पना करते हैं ? जब लोग मुझे बनाकर मेरे साथ बातें करते हैं और लाभ उठाते हैं लेकिन मुझे पता नही होता तो मैं समझ गया कि यह उनकी अपनी ही कल्पना है। इससे क्या लाभ हुआ ? कि मैं अब मन के चक्कर में नहीं आता। एक तो मेरा यह काज बना।

नरायणदास उसे मिलने गया था। वह बताता है कि मरने से एक दिन पहले किसी ने दुर्गादास को कहा 'बाबा जी को कुछ कहना सुनना है, उसने

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

उत्तर दिया नहीं, बाबा जी तो मेरे पास बैठे हुये हैं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तू उसके पास गया था ? मैं नहीं गया। मैंने यह मानवता मन्दिर बनाया। मैं यह काम करता हूं। क्यों करता हूं ? दातादयाल ने कहा था कि फकीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं क्या शिक्षा बदलूँ ? जो कुछ मैंने समझा कि ऐ बन्दे ! सारी कल्पना तेरे अपने ही मन की है। तू इस कल्पना में फँसा हुआ है और हाय हाय करता है, कभी खुश होता है कभी रोता है और कभी कुछ करता है, यह मुझे मिला और मैंने समझा। अब जब मैंने समझ लिया तो जब तक मेरा जीवन है मैं रहता हूँ। मैं कौन हूँ यह मैं अपने आपसे पूछता हूँ। अगर मैं यह कह दूँ कि मैं नहीं हूँ और न मेरा मन है तो मैं कुछ तो हूँ।

मैं कहता हूं कि मन कल्पना करता है लेकिन मैं तो कुछ हूं। वह हैंपना क्या है ? वह मेरे अन्तर वह चीज है जो मन को छोड़कर प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। उसका मुझे पता नहीं लगा कि वह क्या है। जब कभी वहाँ ठहरता हूं तो उस समय क्या होता है ? न वहाँ गुरू, न संसार और न किसी चीज की याद है। वह एक ऐसी अवस्था आ जाती है। इससे सिद्ध हुआ कि क्या काज बना ?

भज गुरु नाम लाग गुरु सेवा, गुरु संग काज बनाता है।
राधास्वामी चरन बलिहारी, सेवक गुरु बन जाता है ॥

मैंने गुरु की बहुत सेवा की जैसे संसार वाले करते हैं। वे फोटो लगे हुए हैं। मैंने सिंहासन चाँदी के, सोने के ताज और चांदी की थालियें थी। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या तुझे इतनी गुरु सेवा करने से कुछ मिला था ? केवल अज्ञान का आनन्द मिला था। ज्ञान का आनन्द नहीं बेज्ञान का आनन्द मिला था। जिस प्रकार बच्चे खिलौने खेलकर आनन्द लेते हैं वैसा आनन्द मिला। मैंने गुरु सेवा क्या समझी ? मेरे गुरु तो दाता दयाल हैं मगर आप भी हैं। जबसे मुझे यह पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। दातादयाल भी मुझे शब्दों में यही कहते थे। मेरे नाम जितने शब्द हैं उन सब में यही संकेत है लेकिन मुझे संकेत का पता नहीं लगता था। फिर इशारे

और असलियत को समझने के लिए मुझे यह काम दिया था।

मैंने गुरु की सेवा क्या समझी ? गुरु की सगत में जाकर गुरु की बात को सुनना, समझना, गुनना और उस पर अमल करना यही गुरु सेवा है। संसार के व्यवहार के लिए बेशक इससे अधिक सेवा है मगर परमार्थ के व्यवहार के लिए कुछ नहीं। आजकल तुम देखते हो हमें गुरुमत में शामिल (सम्मिलित कर लिया गया है लेकिन हमें सच्ची बात किसी ने नहीं बताई। हम लोगों ने आवागवन दुखों से बचने और संसारिक इच्छाओं के लिए गुरुओं के घर भर दिये। उनकी बड़ी-बड़ी गद्दियें Air conditioned कमरे बन गये। उन्होंने हमें अज्ञान में रखकर मोटर कारें और हवाई जहाज खरीद लिये। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि दुर्गादास को मैंने बसरेबगदाद में नाम तो दिया था लेकिन वह दाता दयाल का चेला था। वह अठारह साल का बच्चा वहां नौकर होकर आया था। जब दातादयाल के पास जाता था तो वह कहते थे कि सेठ को बुलाओ। उसने विश्वास किया वह सेठ बन गया। मैंने अपनी ओर सेठ दुर्गादास को सच्चाई बताने में कोई कसर नहीं रखी। तुम्हें भी सच्चाई वर्णन करता हूँ कि गुरु की सेवा, गुरु के वचन को मानना है गुरु तुम्हें बताने आसमान से नहीं आता है। यह गलत है। गुरु तुम्हारे अन्तर रहता है। तुम्हारे बाहर नहीं रहता। बाहर के गुरु ने तुम्हें असली गुरु का रूप बताना है। दाता ने भी मुझे यही कहा मगर मेरी समझ में नहीं आता था। मैं गुरु को लाहौर या राधास्वामी धाम में समझता था। अब तुम लोगों से पता लग गया कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता। जो गुरु तुम्हारे अन्तर अभ्यास में सहायता करता है, वह तुम्हारा अपना ही विश्वास और मन है। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। तुम देखो संसार में इस अज्ञान के कारण क्या कुछ हो रहा है। धर्मों और पंथों के आपस में झगड़े, ईसाई मुसलमानों के झगड़े। पाकिस्तान में क्या हुआ ? यह सब कुछ अज्ञान के कारण हुआ। मुसलमानों ने हिन्दुओं और सिखों के सिर काटे। सिखों और हिन्दुओं ने मुसलमानों के सिर काटे। क्यों काटे ? उनका धर्म अलग और मुसलमानों का अलग। वे यह समझते हैं कि हजरत मुहम्मद

उनको स्वर्ग पहुंचा देगा। ईसामसीह वाले समझते हैं कि तुम ईसामसीह के मार्ग ले लो तुम सतलोक पहुँच जाओगे और गुरुमत वाले कहते हैं तुम गुरु की शरण ले लो, गुरु तुम्हें वहां पहुँचा देगा। मैंने इस बात को जानने के लिए कि सच्चाई क्या है आयु बिता दी या व्यतीत कर दी। इस समय ६२ साल का हो गया हूँ। आज्ञा थी कि असलियत को समझने के लिए गुरु की सेवा करो। मैंने बहुत सेवा की, लेकिन इस सेवा ने मुझे पार नहीं किया। जो सेवा जिसने पार किया वह समझ है। यह समझ मुझे दातादयाल से नहीं मिली यद्यपि उन्होंने लिखा है कि गुरु तेरे पास है मगर मेरी समझ में नहीं आता था। यह समझ देने के लिये कि गुरु तेरे पास रहता है मुझे यह काम दिया था। माताओ ! बहिनो !! पूर्वजो !!! मैं न गुरु हूं और न महात्मा हूं मैं तुम्हारी तरह मानस (इन्सान) हूं। गुरु तुम्हारे अन्तर रहता है। यह समझ मुझे तुम लोगों से आई। जो कुछ तुम्हें मिलता है, तुम्हारी अपनी श्रद्धा, विश्वास और नीयत का फल है और वह गुरु तुम्हारे अन्तर रहता है। क्यों ? लोग मेरा ध्यान करते हैं, उनके काम बन जाते हैं। पता नहीं हर दिन कितने पत्र आते हैं। मुझे कोई पता नहीं होता न मैं कहीं जाता हूं। ऐसी गुरुआई को आग लगे। मैंने मानवता मन्दिर बनाया। दुर्गादास ने इस काम में मेरी सहायता की थी। दुर्गादास मेरा १६१८ का प्रेमी था। मेरे जिम्मे यह कर्तव्य था। मैंने उसे कहा था कि दुर्गिया ! तुम अपने दामाद के साथ ठेकेदारी कर लो, तुम्हें हानि नहीं होगी। जो कुछ बचे उसमें से दस प्रतिशत दे देना ताकि मैं दातादयाल का बुत Slalni यहाँ पर लगा दूं और अपना कर्तव्य पूरा कर दूं। उसने सोलह साल ठेकेदारी की उसे कोई हानि नहीं हुई। इसलिए मैं उसका मान करता हूं।

मैं आज शोक का दिन समझकर सत्संग दे रहा हूँ। जो कुछ तुम्हें, मुझे मिलता है यह हमारे अपने ही कर्म, विचार का परिणाम है। कुछ पिछले और कुछ इस जन्म के कर्म हैं। अगर काज बनाना चाहते हो। काज बनाने का क्या भाव ? कि इस ससार में दुख सुख न सहो। वापिस न आओ और जन्म न ले। जब तक तुम जन्म लेते रहोगे, तुम बच नहीं सकते। न मैं

बच सकता हूं न संत बचे। क्या संतों के लड़के नहीं मरे। क्या सन्त बीमार नहीं हुये। क्या सन्तों का अपमान नहीं हुआ ? सबका हुआ। काज बनाना क्या है ? इस संसार में दिल न लगाओ। मैं उत्साह से कहता हूं कि मैं भी पापी रहा हूं। हम संतान पैदा करते हैं Uncalled for children बच्चे पैदा होते हैं। क्या हम सोचते हैं कि स्त्री पुरुष के मेल से जो बच्चे पैदा होंगे उनका क्या परिणाम होगा ? तो क्या हम जालिम नहीं ? क्या पता जो बच्चा पैदा होगा, वह टी० बी० से मरेगा, उसे कैंसर होगा या कैद होगा या प्रधान मंत्री बनेगा ? किसी को कुछ पता नहीं हम सब दोषी हैं। अब दातादयाल की जवानी गुरु का रूप सुनो—

गुरु हैं तेरे पास फकीरवा, गुरु हैं तेरे पास।

मैं तो उन्हें गुरु समझता था और उनकी पूजा करता था। उनकी सेवा करता था, धन देता था, मत्था टेकता था और नाक रगड़ता था लेकिन वह मुझे वह कहते थे कि भई ! गुरु तेरे पास हैं। मैं ऐसी बुद्धि वाला था कि यह बात मेरी समझ में नहीं आती थी।

त्याग भरम विकार मन का, छोड़ जग की आस।
आस कर सतगुरु चरन की सबसे होय निरास॥

हम गुरु के चरण ये पांव समझते रहे। मैंने ये पांव बहुत धो धोकर पीये। क्या इन पावों को धोने से कुछ मिल गया ? आनन्द और खुशी मिली लेकिन काम नहीं बना। गुरु के चरण प्रकाश हैं। जो आदमी संसार की इच्छा रखता है अगर वह चाहे कि किसी को भी गुरु मान ले और वह उसका बेड़ा पार कर देगा। नहीं कर सकता। नहीं कर सकता॥ नहीं कर सकता॥। परसोत्तमदास ! समझता है सबसे आश छोड़नी पड़ेगी। जो जग की आश नहीं छोड़ता, चाहे उसने लाख भक्ति की हुई है। जो अपने अन्तर प्रकाश में नहीं जाता उसका काज नहीं बनता क्योंकि प्रकाश ही गुरु चरण हैं। मुझे स्वयं पता नहीं कि दुर्गादास का क्या परिणाम हुआ ? अगर यह प्रकाश और शब्द में नहीं गया तो उसे दुबारा जन्म अवश्य मिलेगा। कोई रोक नहीं सकता। अगर मेरा या दातादयाल का रूप उसे लेने गया

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तो फिर भी उसे जन्म लेना पड़ेगा। विज्ञान अनुसार हजूर राय सालिगराम साहिब के कहने अनुसार, बाबा सावनसिंह और हिन्दू शास्त्रों के अनुसार उसे अवश्य जन्म लेना पड़ेगा, बच नहीं सकता।

मैं जानता हूँ कि मैं ऊँचा बोलता हूँ। उसको इसके सुनने की कोई आवश्यकता नहीं मगर आखिर सबको एक दिन यहां से चले जाना है। यह कोई नहीं सोचता कि हम अपना जन्म बनालें। जब मुझे विचार आता है कि किसी स्त्री के पेट के अन्तर मेरा सिर नीचा और टांगें ऊँची होंगी तो मेरी जान कांपती है। पता नहीं कि मैं पार जाऊँगा या नहीं जाऊँगा मगर मुझे रास्ता मिल गया वह मार्ग क्या है? जगत की आस त्यागो। संसार में काम करो मगर उसमें फँसो नहीं। गुरु के चरण प्रकाश हैं प्रकाश को पकड़ो यही सनातन धर्म और सब कहते हैं। दातादयाल मुझे समझाते थे।

गुरु तो तेरे पास फकीरवा, गुरु तो तेरे पास।
त्याग भरम विचार मन का, छोड़ जग की आस॥
आस कर गुरु चरण की सबसे होय निरास॥

लोग वाणियें पढ़कर यही करेंगे। गुरु धारन करके उसकी टांगें दबाते रहेंगे, पांव धोकर पीते रहेंगे और क्या करेंगे? यद्यपि गुरु के चरण प्रकाश हैं। हजूर महाराज राय सालिगराम साहिब जिन्होंने राधास्वामी मत चलाया है, अपनी प्रेमवाणी में साफ (स्पष्ट) लिखा गये कि गुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं और उनके चरण प्रकाश हैं। हमारे यहां क्या है? भूर भव स्वाह महां जना तथा सत्यं तत सर्वत्र वरणियम भरगो देवस्य, घी मही धियौ यो नः प्रचोदयात। आप लोग मेरे पास आते हैं। कई मुझे गुरु मानते हैं। मगर मैं वह गुरु हूँ जो अपने जाल में नहीं फँसाना चाहता। तुम्हें सच्चे गुरु का पता देता हूं मगर तुम लोग मेरे पास धन और पुत्र माँगने के लिये आते हो जो कुछ तुम्हें मिलना है तुम्हारे कर्म का फल मिलना है। तुम कर्म करो। यह लड़की पठानकोट से आई है। इसकी आर्थिक दशा बिगड़ गई है। मैंने इसे कहा कि ध्यान किया कर। करती है मूर्त नहीं बनती और न ध्यान लगता है। भई! ध्यान नहीं बनता तो मैं क्या करूँ, सिर मुडवाऊँ। मैंने

कुछ नहीं देना जो कुछ मिलता है तुम्हारे अपने विचार का फल है। इस वास्ते जो आदमी ध्यान करते हैं, मैं नहीं कहता कि गुरु का ध्यान करो, चाहे राम चाहे कृष्ण, चाहे लक्ष्मी, चाहे दुर्गा का करो। जैसा भी मन चाहे ध्यान करो। हिन्दू शास्त्र गलत नहीं थे, जिन्होंने धन के लिये लक्ष्मी और विद्या के लिये सरस्वती का ध्यान बताया था। इस प्रकार अलग अलग देवता रखे गये थे। तुम्हें जो कुछ मिलता है अपने कर्म का फल मिलता है। किसी ने कुछ नहीं देना। गुरू ने तुम्हें ज्ञान देना है। न इसका ध्यान बनता हैं और न इसके पति का ध्यान बनता है। अरे, भई। तुम्हारा ध्यान नहीं बनता तो मैं क्या करूँ तुम्हें एक बात बताता हूँ कि जीवन में एक जगह विश्वास रखो उसका अपने अन्तर रूप बनाओ। जो कुछ अन्तर से माँगोगे मिलता रहेगा। मैं नहीं कहता कि मेरा ध्यान करो। वासना लेकर भये मध्य में बैठो। जो आदमी अभ्यास करते हैं अगर उनकी बासना गलत है तो वे गिर जायेंगे और दुखी होंगे क्योंकि उनकी वासना और विचार ठीक नहीं हैं। दाता मुझे फरमाया करते थे लेकिन अब तुम लोगों से पता लगा कि गुरु के चरण क्या हैं। मैं तो सारा जीवन बाहर के चरण धोकर पीकर मर गया। उससे मुझे खुशी और आनन्द मिलता था। संसार में प्रसिद्ध होगया कि बाबा फकीर बड़ा भक्त है। जब मैं ध्यान में जाता तो हल्ला पड़ जाता कि फकीर आगया, फकीर आगया, क्योंकि मैं बाहरी आरतियां करता था। क्यों ? क्योंकि संसार बाहरी कामों को देखता है। जो बाहर में दान देता है, अन्तर में चाहे वह चारसौ बीस करे, संसार में वह प्रसिद्ध हो जाता है। यह काम अन्तर का है। मैंने आपको बता दिया कि गुरु के चरण प्रकाश हैं।

पता नहीं दुर्गादास कहां गया। मैं स्वयं अफसोस करता हूं कि मैं कुछ न कर सका। उसने मुझ पर बहुत उपकार किया हुआ है। १६१८ से मेरे साथ लगा हुआ था। बसरे बगदाद में खाना बनाता था। अनेक प्रकार की सब्जियां बनाता था। मेरे पास क्लर्क रहा और मेरे आधीन रहा यहाँ आकर बीस-बाईस हजार तो पहले दिया। उसके बाद तीस रुपये

मासिक मन्दिर को और चालीस रुपये मासिक मुझे देता था। मैं इस धोखे में रहा कि व्यास ने कहा था कि इसकी आयु अभी समाप्त नहीं हुई। पहले इसकी स्त्री मरेगी फिर यह मरेगा। यह भी झूठ नहीं है क्योंकि उसकी पहली स्त्री मर चुकी थी। मगर इसने बिना सोचे समझे बात की। मैं उसके बीमार होने पर उससे न मिल सका क्योंकि ऐसा विचार मिला हुआ था कि वह अभी नहीं मरेगा लेकिन वह मर गया।

तेरे मन में तेरे तन में, तेरे स्वांसों स्वांस।

वह कहते हैं गुरू तेरे मन में, तन में हैं और स्वाँसों स्वांस है। मैं सारी आयु ढूढ़ते ढूढ़ते मर गया कि गुरु कहां है। अगर मैं यह न कहूं कि मेरे मन के अन्तर दातादयाल का रूप प्रकट हुआ और वह रूप गुरू है तो यह गलत है क्योंकि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है लेकिन मैं नहीं होता। फिर गुरु कौन है। ऐ इन्सान! वह तेरा अपना ही आप है और अपनी ही मत है और वह तू आप ही है। यह सच्चाई है। मगर इस सच्चाई को सुनने के लिए कोई त्यार नहीं और न यहां कोई ठहर सकता है—

तेरे मन में तेरे तन में, तेरे स्वांसों स्वाँस।
गुरू बसे दिन रात प्यारे, धर चरन विश्वास॥

जिस समय यह शब्द उन्होंने लिखा उस समय मुझे समझ नहीं थी। अब मैं सोचता हूं कि मेरे मन में गुरु कौन है? अगर मैं दातादयाल की मूर्ति को अपने अन्तर बनाकर अपने सामने रख लेता हूं तो वह गुरु तो नहीं है। क्यों कहता हूँ कि वह गुरु नहीं है? जब लोग मुझे गुरु समझकर अपने अन्तर मूर्त बना लेते हैं और अपने काम करवा लेते हैं लेकिन मैं नहीं होता तो फिर मैं कैसे मानूँ कि गुरु कौन है। ऐ इन्सान! गुरु तेरी अपनी जात है। मुझे यह पता तुम लोगों से लगा। अगर मैंने वही काम करना होता जो दूसरे महात्मा करते हैं तो मुझे मानवता मन्दिर बनाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। मैं किसी डेरे वाले के साथ मिल जाना था ही। जितनी इच्छा करती उनसे धन ले लेता। जिस तरह वह चाहते हैं उनके नाम का प्रोपेगन्डा कर देता।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

गुरू बसे दिन रात प्यारे, धर चरन विश्वास।
गुरु नहिं तीरथ बरत में, गुरू न योग अभ्यास॥
ढूढ़ अपने हृदय में नित, वहाँ उनका बास।

मैंने सारा जीवन ढूढ़ा। आप लोगों के अनुभवों ने मुझे विश्वास करा दिया कि जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है वह मेरी कल्पना है। फिर गुरू कौन हुआ? गुरू मेरी और तुम्हारी अपनी जात है। मगर यह समझ हर आदमी को नहीं आती। आज दुर्गादास के शोक में शब्द था।

मन अन्त काल जब आता है

अब सम्पत्ति और मान बड़ाई, साथ नहीं कुछ जाता है।
भज गुरुनाम लाग गुरु सेवा, गुरु संग काज बनाता है।

मैं आज अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या तूने अपना काज बनाया? अगर बनाया तो क्या बनाया? अगर गुरु की सेवा ताज बनाने और हर चीजें देने से मुझे सिवाय आनन्द के कुछ मिल जाता तो मैं मान लेता कि यह गुरु की सेवा है। गुरु की सेवा, गुरु की बात को समझना, गुनना और बिचारना है। यह शब्द निकला। अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या तेरा काज बन गया? हां! बन गया। तुम लोग मेरे सच्चे सत्गुरु सिद्ध हुये जब मुझे आपसे पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर जितनी फुरना होती है या जो कुछ मैं सोचता हूँ, यह मेरी कल्पना है। जब यह विश्वास हो गया कि मेरी कल्पना है तो फिर मैं कल्पना में तो फँसूँगा नहीं। आगे क्या है? आगे शब्द और प्रकाश है। जो चीज प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह मैं हूँ। अगर मेरी यही दशा अन्त समय पर भी रही तो मेरा काज बन गया। काहे का काज बना? न पहले मेरी मैं थी और न बाद में रहेगी। मेरी समझ में यह आया है।

मैंने आज दुर्गादास के मातम में तुम्हें सत्संग करा दिया। मैंने जो कुछ प्राप्त किया वह कह सकता हूँ। आप लोगों की कृपा से मुझे

शान्ति और (Peace) मिली और मेरे भ्रम समाप्त हो गये जबसे मुझे विश्वास हो गया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, लोग मेरा रूप बनाकर काम ले लेते हैं तो सिद्ध हो गया कि जितने भी गण-मतान्त्र है ये सब मनगत हैं। मन के चक्कर से नहीं निकले। भारद्वाज आप आये हो। आप निवृति मार्ग चाहते हो निवृति मार्ग में सारे सहारे छोड़ने पड़ते हैं। पिछले कल अर्थात एक दिन पहले कबीर साहब का एक शब्द था।

उतते कोई न आया, जासे पूँछा जाये।
इतते सब कोई जात है भार लदाय लदाये॥
इतते सत्गुरु आया बुद्धि मत

मैं भारद्वाज को कह रहा हूँ सोई ऊपर वह कहते हैं अमरपुरी चला हूँ। किस तरह ? टोरे टोरे टार अर्थात सब सहारे छोड़ जाता हूं। फिर सूली ऊपर घर क्या ? सूली में क्या होता है ? जब आदमी को सूली पर चढ़ा देते हैं तो नीचे से फट्टा निकाल लेते हैं। उसकी टाँगों और हाथों को कोई सहारा नहीं रहता। अपने घर वह जा सकता है जो किसी दूसरे का सहारा नहीं लेता। जब आदमी वहाँ पहुँच जाता है तो गुरु का भी सहारा छूट जाता है। गुरु तो अपना आप है दूसरा कोई नहीं। दूसरा होता तो मैं मान लेता। मैं दूसरा समझता था। मैं समझता था कि गुरु लाहोर या धाम में है यह काम मुझे असली गुरु का पता मिल जाये।

आप गृहस्थियों को न मुक्ति की इच्छा है और न किसी और चीज की। संसारी बातें सुन लो तुम्हारे विचार में शक्ति है। आप अपने अन्तर अपनी वासना को रखकर ध्यान किया करो। मैं नहीं कहता कि तुम मेरा ध्यान करो। लेकिन एक का करो और एक Pose का करो। चाहे राम, चाहे कृष्ण, चाहे देवी और चाहे देवता अर्थात एक का ध्यान करो। अगर तुम्हारी मनोकामना पूरी न हो तो मेरी फोटो पर जहाँ फूल चढ़ाते हो वहाँ जो इच्छा करे वर्ताव

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

किया करो। यह नियम है। मैं लोगों को नाम क्यों नहीं देता ? क्योंकि अगर उनके मन की बासना गलत होगी तो वह ध्यान करने से बढ़ जायगी और उनकी हानि होगी। साधारणतया कोई भाई का शत्रु, कोई चाचे का शत्रु है, कोई अपनी स्त्री से अनबन रखता है, कोई कामी और कोई लालची है इसलिए मैं नाम नहीं देता। नाम अधिकारी को मिलना चाहिए। जो आदमी अन अधिकारी को नाम देता है वह गुरु नहीं है। इन गुरुओं ने हमें नाम नहीं दिया, अपने नाम के लिए नाम दिया है। एक पंथ कहता है कि माँस भी खाओ और शराब भी पीओ जहाँ इच्छा है जाओ, किसी की स्त्री किसी के साथ फिरे। उसका क्या परिणाम निकला ? जो लोग ये बातें चाहते थे वे इकट्ठे हो गये इसी प्रकार मैं किसी को कह देता हूँ कि तेरे पुत्र हो जायें उसके पुत्र हो जाता है। वह समझता है कि बाबा बड़ा करनी वाला है, आकर सेवा शुरू कर देता है। लेकिन मैं आपको शपथ पूर्वक कहता हूँ कि मैं कुछ नहीं करता जो कुछ करता है तुम्हारा मन विश्वास और श्रद्धा करती है। मैं यह नहीं कहता कि मुझ पर विश्वास रखो, जहाँ तुम्हारी इच्छा है वहाँ विश्वास रखो।

अगर संसार से पार जाना चाहते हो तो यह मार्ग है वहाँ तो मन ही नहीं है। कैसे पहुंचोगे, जब तक मन से परे नहीं जाते वहाँ नहीं पहुंच सकते। आज आपको बहुत सत्संग करा दिया। आपको नहीं कराया अपने आपको कराया है। अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीरचन्द ! तुझे वह गुरु मानता था। उसने तेरा मन्दिर बनाया। तेरी सहायता भी करता था जब तू गरीब था। जब यहाँ खुशीराम के यहां से नौकरी छूट गई तो मैं अलीगढ़ चला गया। लड़का अभी काम पर नहीं लगा था। तो मैंने उसे लिखा कि मैं आगया हूं, पीछे घर पर मेरी स्त्री है तुम बीस रुपया महीना भेज दिया करो। दुर्गा-दास ने बीस रुपया महीना भेजना शुरू कर दिया। फिर जब मेरी स्त्री बीमार होगई तो नौकर रखना पड़ा तो उसने बीस की बजाये

चालीस रुपये कर दिये। मैं महसूस करता और सोचता हूँ कि तू ने गुरु बनके उसके साथ क्या किया ? क्या तू उसकी रूह को लेगया। क्या तुम्हें पता है कि वह कब मरा ? मुझे पता नहीं। मैं ऐसा गुरु नहीं बनना चाहता हूं जो पाखण्ड जमा कर तुम लोगों की आँखों में मिट्टी डाल कर तुम लोगों से धन लूँ और अपनी सम्पत्ति बनाऊँ। यह परोपकार का काम है। तुम्हारी खुशी हो तो सत्संग में आया करो अगर न हो तो मत आया करो। तुम्हारी खुशी है मेरी किताब पढ़ो, अगर नहीं तो न पढ़ो। अगर खुशी से मन्दिर को कुछ देना चाहो तो देजाओ वरना मत दो। मैं स्वयं डरता हूँ कि मेरा क्या परिणाम होगा। मैं मरूँगा तो कहाँ जाऊँगा।

मैं यह नहीं कहता कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही सोलह आने सच है। सचाई की खोज में मेरी आयु व्यतीत होगई। मैं बानवे साल का होगया हूं। मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूँ। आप लोग मेरे पास आते हो, मुझसे कुछ आशा करते हो। मेरे पास शुभ भावना है और कुछ नहीं। सब को good wishes देता हूं। अपने जीवन को साफ रख कर जाना चाहता हूं। कोई धोखा फरेब की बात नहीं अगर good wishes में कोई शक्ति है और तुम्हारा बिश्वास है तो तुम्हारा भला हो जायेगा। अगर तुम यह कहो कि मैं कोई जादूगर हूँ या मैं किसी के अन्तर जाता हूँ तो वह गलत हैं। मेरी तो अपनी आँखें खुल गईं। अब मैं यह कहता हूं कि इन वर्तमान धर्मों और पंथ वालों ने हमें अज्ञान में रख कर, मूर्ख बना कर उल्लू बनाया है और लूटा है। मैं इस परिणाम पर आया हूं कि इन्सान का अपना ही मन है जो सब ओर चक्कर मारता है। वह समझता है कि कोई राम कृष्ण या कोई गुरु आता है। सब पाखण्ड का जाल और धोखा है। कोई किसी के अन्तर नहीं जाता। मैंने अभी बताया कि दुर्गादास मर गया लेकिन मुझे पता नहीं और मैं सोचता था कि वह अभी नहीं मरेगा। अगर मुझे

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सतसंग

हजूर परमदयाल पं फकीरचन्द जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ३० जुलाई, ७८

सन्त कबीर की बाणी पढ़ी गई—

सतो समझे का मत न्यारा जो आतन तत्व विचारा ।
औरन को कहै आपा खोजो और अपना नहीं जाना ॥
मुख कुछ आन हिरदे कुछ आना कैसे काम पहचाना ।
औरन से कहे मोह न कीजे निर्मोही रहिये ॥
माया मोह सकल आप ही में या दुख का सो कहिये ।
औरन सों कहत तजो बढ़ाई, आप बढ़ाई चाहे ॥
मान बढ़ाई छूटत नाहीं, झीना पीर कहावै ।
औरन से कहे पक्ष न कीजे, आपा पक्ष न त्यागै ॥
कहन सुनन को साध कहावें, सांच कहै रिस लागै ।
जब लग काग केस मन मांही अस्तुति नींदा भाए ॥
तब लग गय ताप न धूरें कहा भये बहु गाये ।
पद साखी औरन समझावे आप समझना नाहीं ॥
कहैं कबीर राम क्यों दरसे जब दुविधा मन मॉही ।

मैंने जीवन में जो कुछ समझा उसके आधार पर काम करता हूं । लोग मन्दिर बनाते हैं उसमें मूर्ती भी रखते हैं वह मूर्ती किसी धातु या पत्थर की होती है, धातु गलाई जाती है फिर ढाली जाती है, पत्थर को हथौड़ी और छेनी से तराशा जाता है तब मूर्ती बनती है । कोई विष्णु, कोई राम, कोई ब्रह्मा व कृष्ण मानकर मन्दिर में अपना मस्तक झुकाते हैं । इसी प्रकार पति पत्नी अपने कर्तव्य को मानकर आपस में बँध जाते हैं । मैं भी एक दृश्य के आधार पर दातादयाल जी महाराज के चरणों में पहुँचा था । मैंने उनको राम मान लिया था । अन्य लोग उनको क्या राम मानते थे इससे मुझे सोचने की भी आवश्यकता नहीं थी । मैंने उनको राम माना व उसके अनुसार

मेरा कर्तव्य है कि मैं उनकी आज्ञा का पालन करूँ। उनकी मुझे आज्ञा थी कि निबल अबल व अज्ञानी जीवों की सहायता करूँ व सत शिक्षा के द्वारा जगत कल्याण के लिये प्रयत्न करूँ। जिससे जीव भवसागर से पार जा सके। उनने मेरे बारे में कहा था—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया परमदयाल सनेही ॥

कल विचार आया १५ अगस्त आ रहा है, अपने आपसे पूछा तूने जगत कल्याण के लिये क्या काम किया ? मैंने सन १९४६ में आजादी की कुंजी नाम की किताब लिखकर प्रकाशित करवाई थी उसका अंग्रेजी में भावान्तर Key to freedom नाम से भी छपा है— उस किताब में अपने सामाजिक ज्ञान व आत्मिक अनुभव का आधार ही था। मैंने लिखा था कि अभी भारतवर्ष में जितने कष्ट आजादी की प्राप्ति के पहले हैं इससे अधिक त्रास, कष्ट आजादी के बाद आयेंगे और आज १९७८ है। मैं देख रहा हूं कि मेरा अनुभव ठीक निकला— मैंने तब ऐसा क्यों लिखा था क्या मैं निराशावादी हूँ या क्या मैं आजादी नहीं चाहता था ? नहीं मैं थोथी आशा नहीं रखता यथार्थ कहता हूँ कोई सुने मेरी बात या न सुने मेरी रचनायें पढ़े या न पढ़े। मेरा अपना अनुभव था कि सपने में किसी के मुक्का मारते हैं तो हाथ हिल जाता है, डरने के सपने से लोग चीख पड़ते हैं, सपने में स्त्री से भोग में वीर्य निकल जाता है। जब सपने के विचार का प्रभाव देह पर होता है तो हम जाग्रत में जो सोचते हैं उसका प्रभाव क्यों नहीं होगा ? विचार के प्रभाव से कोई बच नहीं सकता। इन दिनों आप देखो देश में क्या हो रहा है ? बड़े बड़े नेता व राजनैतिक दल एक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं वह चाहते हैं कि उनको ऊँचा पद प्राप्त हो जावे। ऐसे ही घरों में भाई भाई को बदनाम करता है, द्वेष करता है घर के सदस्य मनमानी करते हैं। ऐसी दशा में कैसे घरों में व देश में शांति हो

इसकी आशा हम करें। इस किताब में आजादी के बाद कष्ट बढ़ेंगे यह लिखने का यही आधार था। जब तक लोगों का अखलाक, चरित्र ठीक न हो, लाख कोई पार्टी आवे कोई कुछ करे।

मैं दातादयाल जी के चरणों में गया उनने सन्त मत की शिक्षा दी सन्त मत की वाणी कहती है "अपना आपा चीन्हो" मैं तो राम को मिलने गया था आपा चीहने या देखने नहीं—उनकी आज्ञानुसार काम कर रहा हूँ मुझे लोगों ने कहा कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट हुआ उसने मार्गदर्शन किया व सहायता मेरे रूप ने लोगों की की। वास्तव में मुझे पता नहीं होता कि कौन क्या मेरे रूप से सहायता प्राप्त कर रहा है तो मुझे विश्वास हो गया कि यह उनका अपना विश्वास श्रद्धा व विचार का ही फल है—उनका विश्वास उनका राम या फकीरचन्द है—मेरे पास दूर दूर से लोग आते हैं—किसी को कुछ कह देता हूं और वह पूरा हो जाता है। मैं मेरे पास आने वाले के भाव व विचार जान लेता हूँ या समझ लेता हूँ उसका नतीजा मन में निश्चित करता हूँ और कह देता हूँ और व पूरा होता है। जिस तरह व्यक्ति के भाव मन से जाने जाते हैं। कुछ लोग समाज के भाव विचार जानने का प्रयत्न करते हैं। ऐसी पुस्तकें लिखने व बातें कहने के कारण सुनने देखने व पढ़ने वाले मेरी इज्जत करते हैं—मुझे पता नहीं कैसे मैं कह देता हूं लिखता हूं—इस कारण मैं अपना आपा खोजने का विवश हुआ। मैं भक्ति करता था राम या दाता जी को पूजता था वह तो मैं मन से पूजता था। अपने को जानने के लिये मन से ऊपर जाना आवश्यक है। अपने घर जाने या आप खोजने के लिये मन बुद्धि विचार छोड़ना ही पड़ेंगे। वह कौन ताकत है जो विश्वास करने वाले श्रद्धा रखने वालों का नाम रूप बनाकर करती है। मेरे काम भी किये व अब मेरे मिलने वालों के काम मेरे रूप में करती है। उसको पाने के लिये मेरी बुद्धि मन व ज्ञान तथा कर्मेन्द्रियां अपना काम छोड़ देती हैं। कई लोगों को मन

व ज्ञान तथा कर्म इन्द्रियों के सो जाने के बाद का अनुभव होता है किन्तु उस अवस्था से नीचे आने पर संसार के लोभ मोह आदर व धन की तृष्णा में लोग फँस जाते हैं। कर्म व ज्ञान इन्द्रियों के वश में आ जाते हैं। उनने जैसा अपने को जाना और न जाना। दोनों उनकी दशाएँ बराबर हैं। उनको कोई लाभ नहीं जिस प्रकार अपने आपे को पहचानने के बाद रहनी बनाये रखना ज्ञान कर्म इन्द्रियों के वश में न आना मन पर निगरानी नहीं रखने से गिरावट बड़े बड़े महात्माओं को आई है इसी तरह आजादी मिलने के बाद हम हिन्दुस्तानियों ने वह नहीं किया जो करना था। जब तक लोगों को यह नहीं समझाया जाता कि जैसा तुम्हारा घर वैसा देश भी तुम्हारा बड़ा घर है काम नहीं बनेगा। हमको तो सिखाया गया। हड़तालें करना एक दूसरे की निन्दा करना। और फिर विधान सभाओं में जाकर जूतम पैजार करने वाले, एक दूसरे का सिर फोड़ने वाले, रँगे फुसाद कराने वाले सभी इलैक्शन जोतकर राज्य ही तो करना चाहते हैं। दातादयाल जी मेरे राम ने जगत कल्याण के लिये काम करने की आज्ञा दी थी उनकी दी हुई रूहानियत के अनुभव से कहता हूँ कि चाहे किसी-दल का प्रधानमंत्री आ जावे या ये दल चाहे कुछ करलें जब तक जनता की जागरती नहीं होती अखलाक ठीक नहीं होगा व बगैर अखलाक ठीक हुये कुछ न बनेगा। अखलाक को सुधारने के लिये धर्म तथा शासन का भय चाहिये इन दिनों न तो शासन का डर है न हम धर्म परायण हैं। धर्म क्या है ? अपने मन के ज्ञात को विचारों को ठीक रखना और अपना लक्ष्य देश की एकता बनाये रखने और उस परमतत्व आधार जिसने सब कुछ रचा हुआ है जिसको सभी धर्मों ने अलग अलग नाम से पुकारा है से प्यार करने का प्रयत्न करते रहना यही दो उपाय हैं।

थोड़ी देर के लिये मान लो कि गवर्नमेंट के सभी कर्मचारी बा अखलाक हो जावें न पब्लिक बा अखलाक न हो तो गवर्नमेंट क्या

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कर लेगी. गवर्नमेंट ने तो मदद करना है – सारा काम तो पब्लिक ने ही करना है हम कुछ न करें तो कुछ न होगा। हम हमारे घरों में प्रेम एक दूसरे के प्रति सदभाव नहीं रखते हर घर में अशान्ति है तो देश में शाँति कहाँ से आना है। जिनके अपने घरों में अनुशासन नहीं हैं, प्रेम भाव नहीं है मन में दूसरों के प्रति नफरत है उसे मिनिस्टर बनादो वजीर बनादो वो क्या मुल्क में शाँति लायगा ? जब श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रधान मंत्री बनी थी मैंने कहा था कि काँग्रेस में फूट पड़ जायगी और पड़ गई। जब लालबहादुर शास्त्री ताशकंद समझौते के लिये गया। मैंने स्वामी प्रयागलास व अन्य लोगों को कहा था कि वह जिन्दा वापस नहीं आयगा। यह मेरे अनुभव थे और सही निकले। न मेरे दाता मुझे काम देते न मैं सिर खपाता। मैं नहीं जानता कि उनने मुझे क्यों काम दिया वश मैं यही जानता हूं कि जो मैं कहता हूँ वह ठीक ही है मैं जो समझता हूं उनकी आज्ञा से खास समय पर कहता रहता हूँ। भारतवर्ष में जब तक यही प्रथा है कभी शाँति नहीं आयेगी। दूसरे हमारा समाज इतने धर्मों में बँटा हुआ है कि इसका हिसाब नहीं और धर्मों तथा पंथों के प्रधान लोग जनता को सही रास्ता नहीं बताते सच्चा ज्ञान नहीं देते मन पर कन्ट्रोल करने की आदत हम में नहीं चुनाव का ढग हमको उकसाता व लालच देता है फिर शाँति कहाँ ?

जो लोग मेरी संगत में आते हैं, जिस भावना से आते हैं वह अगर उनको नहीं मिलता तो इसमें उनका नहीं मेरा दोष है ऐसा मैं मानता हूँ मैंने अपने जीवन में बाअमस रहने का प्रयत्न किया है, कई बार मैं मन से गिरा हूँ किन्तु मैं नब्वे प्रतिशत सफल रहा हूँ। जो लोग मेरे पास आते हैं उनको कहता हूँ, मन वचन कर्म से अपने को ठीक रखो। 'शिव संकल्प मस्तु' यही वेद मार्ग है। यदि मन कर्म वचन, विचार ठीक नहीं हैं तो तुम प्रसन्न नहीं रह सकोगे। चाहे फिर कुछ करलो। हमारे आचरण की खराबी में अधिक अपराध

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

हमारे माता पिता का है, हममें से ९९ प्रतिशत खुदरौ औलादे हैं। जो अच्छी संतान के विचार से पैदा नहीं किये गये कैसे आशा करें कि समाज ठीक हो जाये। मैं नहीं जानता मेरा यह कथन ठीक हो किन्तु यह मैंने अपने घर मे आजमाया हुआ है। इसलिये मैं शिक्षा देता हूँ कि सन्तान को अच्छी सन्तान के विचार से पैदा करो नहीं तो अच्छी सन्तान सफल सन्तान की आशा मत रखो। आज कितने एम० एल० ए०, एम० पी०, मिनिस्टर ऐसे हैं जा पूरी तरह अनुशासन में रहकर मानवता के सिद्धान्त पर चलते हैं। वे हमसे कहते हैं यह करो वह करो इनके कहने का कितना असर होगा। लोग आते हैं न मैं कह देता हूं। मुझे भी तो दाता ने बुलाया नहीं था। मेरा भाग्य मेरा भीतर का एक द्रव्य मुझे ले गया था। उनको परमतत्व आधार या राम मानता था उनने जगत कल्याण की ड्यूटी दी थी। अपनी बुद्धी समझ के अनुसार कहता रहता हूं। आज लीडर हों या धर्मों पन्थों के अगुआ हों सब अपने को अधा दूसरों के रास्ता का खराब बताते हैं। झूठा मान इज्जत लेते हैं। इनके कहे में चलने से क्या लाभ उनके साथ देने से संगत से क्या फायदा। जिस तरह घर का मुखिया घर के लोगों की सेवा नहीं करता उन्हें अच्छे रास्ते पर नहीं चलाता तो लोग उसकी निन्दा करते हैं। इसी तरह जा लीडर, मिनिस्टर या पन्थों धर्मों के नेता सदशिक्षा नहीं देते। अपने कर्तव्य का सच्चे होकर पालन नहीं करते। मेरी नजर में सभी बुजदीक हैं। मैं साहस पूर्वक सच्ची पुकार करता हूँ किन्तु आज लोग सचाई सुनने को तैयार नहीं। मेरी आयु ९२ साल की हो गई। स्वास्थ्य इजाजत नहीं देता। अमरीका के लोगों ने बुलाया है और कर्म भोग तथा कर्तव्यवश मैं जा रहा हूँ। वहाँ भी शांति नहीं है यहाँ भी इन्दिरा की हुकूमत कामयाव नहीं हुई। अब जनता पार्टी की हुकूमत है। देखो क्या होता है। इसमें शक नहीं कि आजादी के बाद वतन की माली हालत काफी सुधरी है मगर अखलाक तो

बिल्कुल ही गिर गया है। हरेक आदमी बगैर मेहनत का काम चाहता है और अमीरी चाहता है हर राजनैतिक कार्यकर्ता. वजीर, मिनिस्टर, एम० पी०, एम० एल० ए० या कोई पद चाहता है। इस के लिये कुछ भी करना पड़े। मैं मानता हूं कि मैं होऊँ बजार हो महात्मा हो, लीडर हो अमीर हो गरीब हो सबको कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा। कर्म फल से कोई न छूटेगा। कहा है—

नर भोगे बारम्बार अवश्य फल कर्म किये का।
सोच समझ पगधार मरम जग जनम जिये का।।

अपने मन में सोचो और अपने व्यक्तिगत जीवन में क्या क्या किया हैं ? कुकर्म करें व शान्ति चाहें—कैसे मिलेगी शान्ति ?

एक जो कहिये राम महाप्रभु पुरुषोत्तम मर्यादा।
गुप्त घाट सरयू जल काढ़ै पढ़ रामायण संवादा।।
दूजे कहिये कृष्ण विवेकी सोल्हा कला के पूरे।
यादव कुल नामी भील की गासी भये मान मद चूरे।।
तीजे कहिये अवध नरेशा श्रवणमुखी को मारा।
पुत्र वियोग राम को त्यागा मिला न राम सहारा।।
चौथे कहिये युधिष्ठर धर्मराज की अकथ अपार कहानी।
भाई भावजा संग जाय गले सो हम सब कोई जाती।।

युधिष्ठर की कथा है —भागवत कहता है उसने सारी उमर धर्म का आचरण किया सदा सत्य बोला। केवल एक बार अश्वत्थामा हता नरो वा कुँजरोवा—कहने से उसे ढाई घड़ी का नरक भोगना पड़ा और अर्जुन ने १८ अध्याय गीता के कृष्ण के मुख से सुने वह भी अपने सब भाइयों व कौरवों के साथ नरक में गया।

मैं आपसे पूछता हूँ आप लोग मेरे सतसंग में क्यों आते हो ? क्या यहाँ तमाशा होता है ? क्या यहाँ औरतें नाचती हैं ? मैं जो कहता हूँ आपको नहीं अपने को भी कहता हूँ कि "बूढ़ क्या कोई

उपाय है कर्म के फल से छूटने का ? एक उपाय है कि हम मरने के समय पुकारा व शब्द में चले जाएँ तो आवागवन से बच सकते हैं और अकल इसे ठीक मानती है। जिस तरह एक आदमी हिन्दुस्तान का रहने वाला पाकिस्तान या विदेश चला जावे तो विदेश में हिन्दुस्तान का कानून प्रभाव नहीं करता। इसी तरह दूसरी मिशाल से समझो कि आपरेशन होना है तो कोई दबाई बेहोशी की देदी या इन्जेक्शन दे दिया तो चीरा फाड़ी का पता नहीं लगता कष्ट नहीं होता इसी तरह मरने के समय मन बुद्धी से परे प्रकाश में जाने से आवागमन नष्ट हो सकता है। वैसे तो भलाई बुराई सबसे होती है। हाँ प्रकाश या शब्द में जाने से मेरा अनुभव मानता है कि कर्म फल से बचा ना सकता है जिस अवस्था में मन नहीं होता मन ही बन्धन व माया का अनुभव कराता है।

एक दोहा है—

नाम जो रत्ती एक है पाप जो रत्ती हजार।
आध रत्ती जो घट संचरे जार करे सब धार ।।

वो नाम क्या है ? कोई राम राम कहता है, कोई कोई राधा-स्वामी राधास्वामी कहता है। नाम उस अवस्था को कहते हैं जब साधक प्रकाश और शब्द में लीन हुआ होता है वह है नाम लेना या नाम की प्राप्ति। सन्त कहते हैं उस अवस्था में पाप पुन्य नहीं रहते सुरत तब स्थूल व सूक्ष्म प्रकृति से निकल जाती है। इसीलिये सन्तों के मन में नाम की महिमा है। यह मैं भी मानता हूं किन्तु यह कहाँ तक ठीक है अनुभव करके देखें।

इसी प्रकार राजनैतिक जगत में राष्ट्र की एकता चाहिये, व्यक्तिगत सुख शान्ति के चिन्तन से ऊपर उठकर देश की सुख शाँति का उपाय किया जावें। यह बसें जलाना, दफ्तरों की, कारखानों की हड़तालें, गाड़ियाँ गिराना, तोड़ फोड़ की कार्यवाहियाँ पूरी तरह से देशद्रोह है। जिस तरह नाम जपने वाला शब्द प्रकाश का इष्ट

नहीं रखे तो वह अपना खुद का घातक है। हम लोग नामधारी जरूर हैं। मगर हमारा इष्ट तो कोई देहधारी कोई आश्रम या कोई धर्म है। ऐसे आदमी को मुक्ती नहीं। इसी प्रकार आदमी में मानवता नहीं वह आदमी नहीं। आज जो कुछ मैंने कहा अहमियत व राजनैतिक विचार को मद्दे नजर रखकर अपने कर्म भोगवश दातादयाल जी की आज्ञा से कहा।

"ऐ मालिक सर्वाधार दातादयाल ! तेरे इश्क में बचपन से चला था। बुढ़ापा आ गया अब अपनी गोद में ले ले शरीर भी दुर्बल हो गया कोई न कोई दौड़ा लगा रहता है। अब ज्यादा काम नहीं होता।"

सबको राधास्वामी

—— | ——

नम्र निवेदन

ग्राहक भाइयो अब इस वर्ष का ११वां अंक आपके हाथों में है परन्तु अभी तक आप में से ६५ प्रतिशत लोगों ने इसका वार्षिक मूल्य जो कि सिर्फ ६) रु० मात्र है, नहीं भेजा है। जबकि हम आपकी सेवायें निस्वार्थ भाव से निरन्तर कर रहे हैं क्या आपका भी कर्तव्य नहीं बनता कि इस पत्रिका के द्वारा प्रसारित अमूल्य विचारों का ज्यादा से ज्यादा प्रचार हो और सांसारिक जीव उसका लाभ उठा सकें यदि हाँ तो फिर आप अपना बकाया चन्दा शीघ्र भेज दें और इस पत्रिका के ग्राहक बढ़ाने में हमारा सहयोग दें।

प्रकाशक

कुण्डलियां

ब्रह्म बढ़ै चिन्तन करै, यही ब्रह्म का अर्थ
यही ब्रह्म का अर्थ, और कोई अर्थ न दूजा ।
सोचै बढ़ै सो ब्रह्म, वही करै ब्रह्म की पूजा ॥
बढ़ो बढ़ा बढ़ चलो, सोचकर नित हो बढ़ना ।
जीवन का रस मिले, बुद्धि में जीवन गढ़ना ॥
बुद्धि भाव चिन्तन नहीं, उसका जीना व्यर्थ ।
ब्रह्म बढ़ै चिन्तन करै, यही ब्रह्म का अर्थ ॥

—०—

शोक समाचार

परम पूज्य आनन्दराव जी, हैदराबाद से श्रीमती सत्यभामा के स्वर्गवास होने पर उनके सुपुत्र नरायनमल जी द्वारा मनुष्य वनो पत्रिका के लिये २५) रु० दान भेजा है । हम उनके अत्यन्त आभारी हैं और परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करते हैं । मालिक उनके परिवार को इस अपार क्षति को वहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

व्यवस्थापक